रंग लाइ है बर्बरीक | By Mukesh Bagda

रंग लाइ है बर्बरीक तेरी क़ुर्बानी
आज घर घर में पुंज रहा शीश के दानी
आज घर घर में पुंज रहा शीश के दानी
आया तेरा ज़माना कलयुग का वरदानी
आज घर घर में पुंज रहा शीश के दानी
आज घर घर में पुंज रहा शीश के दानी

कहानी है तेरी ज़माने से जुदा
तेरे जैसा कोई ना हुआ ना होगा
याद है आज भी तेरी वो दास्ताँ
तेरे तरकश में रखे तीन बाणो का समा
सारे पत्ते छिदे रे तेरे एक बाण से
देखते श्याम रहे तुझे हैरान से
कहानी ने यही से मोड़ लिया बलिदानी
आज घर घर में पुंज रहा शीश के दानी
आज घर घर में पुंज रहा शीश के दानी

देख के तेरा बल श्याम ने सोच लिया
ये मचा देगा कहर इसने जो युद्ध किया
रहेगा ये सदा हार होती है जिधर
आज होगा इधर ये तो कल होगा उधर
यूँही चलता रहा तो होगी मुश्किल बड़ी
कुछ तो करना पड़ेगा हाँ मुझे इस घडी
तब तेरा शीश मांगने की श्याम ने ठानी
आज घर घर में पुंज रहा शीश के दानी
आज घर घर में पुंज रहा शीश के दानी

दक्षिणा शीश की मांग ली श्याम ने
हाथ में शीश था श्याम के सामने
श्याम ने वर दिया ओ प्यारे बर्बरीक
मेरे ही नाम से होगी पूजा तेरी
पुजेगा कलयुग में बर्बरीक तू घर घर
न रहेगा कोई तुझसे फिर बेखबर
ये वचन सच हुआ कहता है बागड़ा यानी
आज घर घर में पुंज रहा शीश के दानी
आज घर घर में पुंज रहा शीश के दानी

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b0%e0%a4%82%e0%a4%97-%e0%a4%b2%e0%a4%be%e0%a4%87-%e0%a4%b9%e0%a5%88-%e0%a4%ac%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%ac%e0%a4%b0%e0%a5%80%e0%a4%95-by-mukesh-bagda/